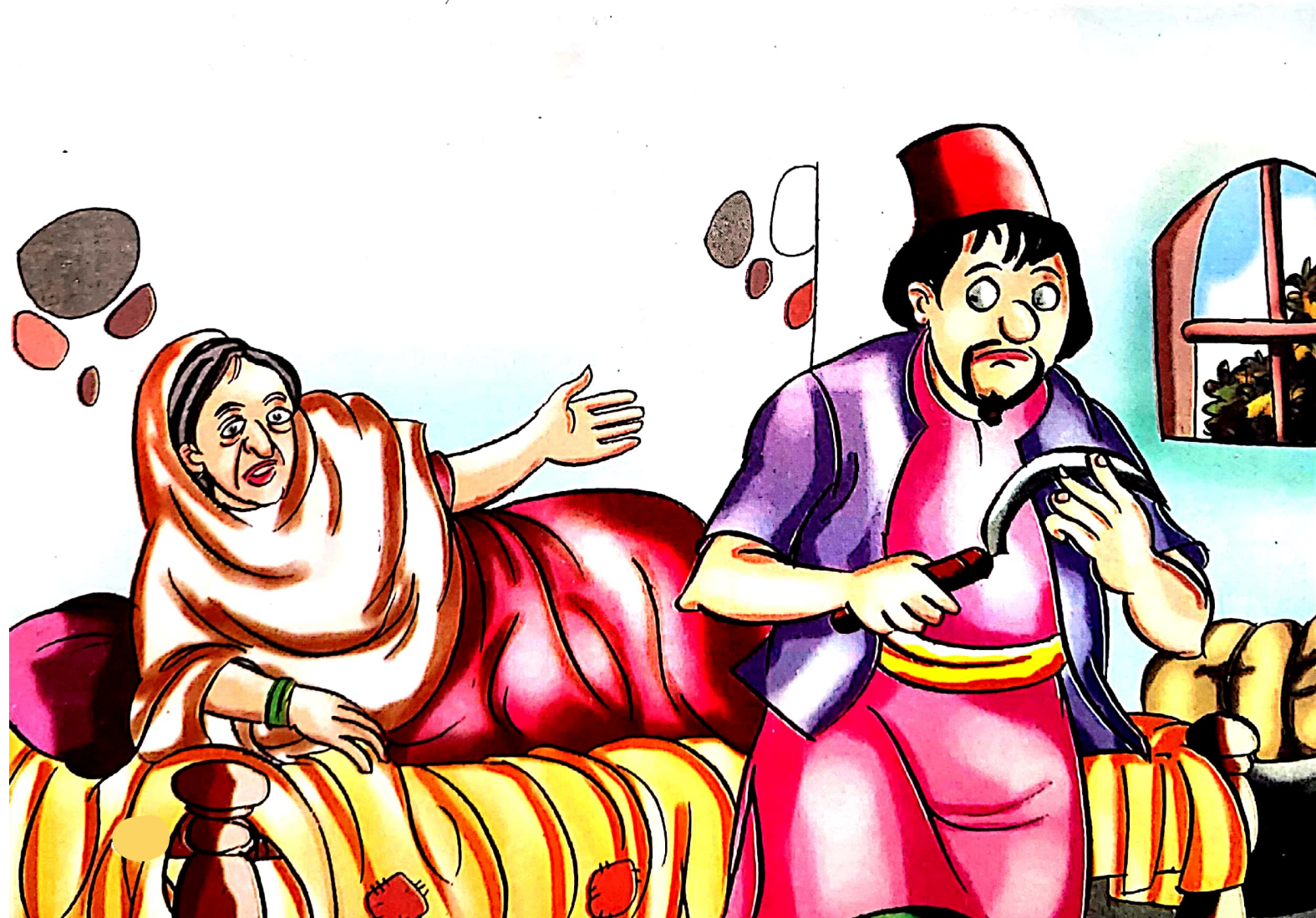
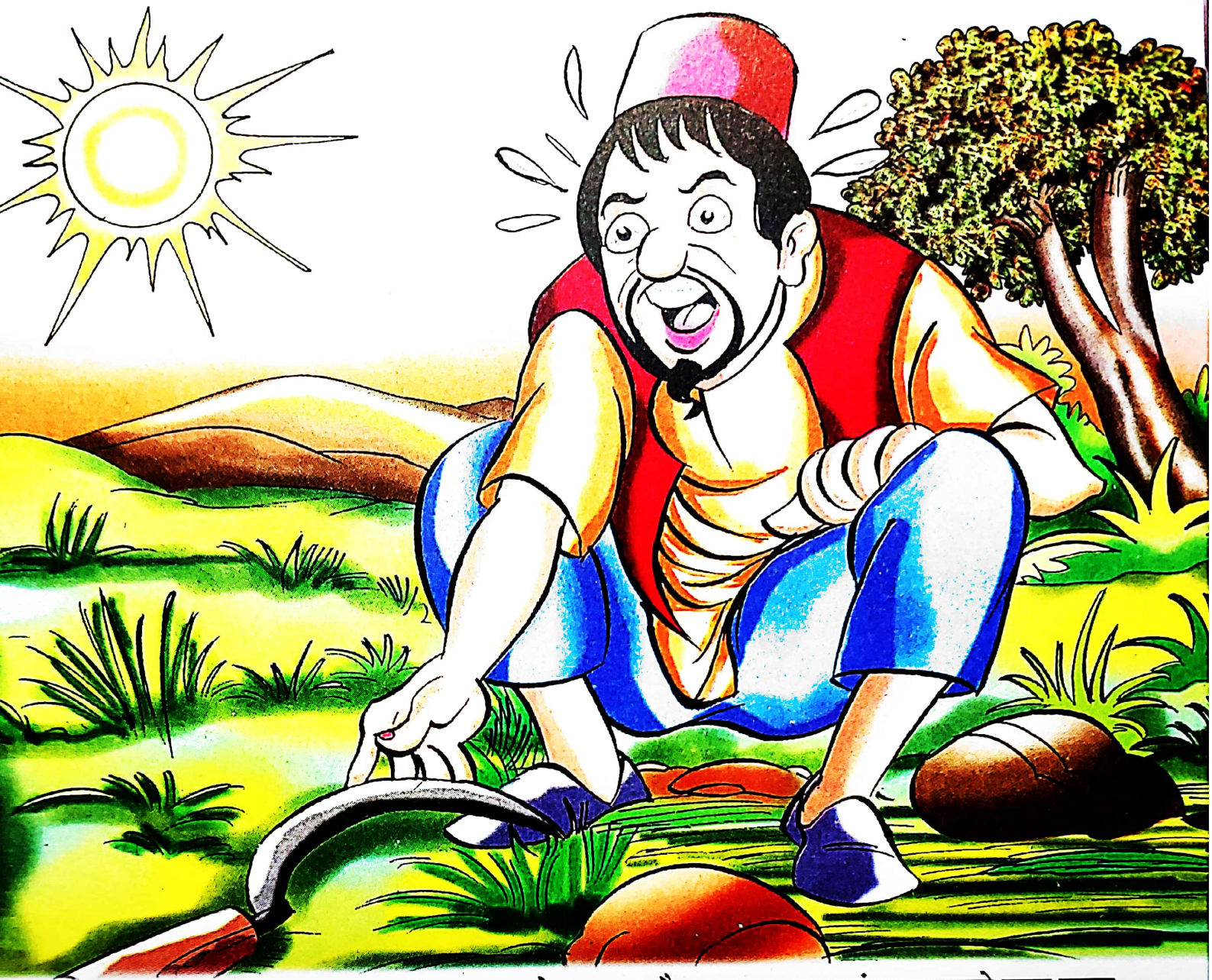


बुखार का इलाज

एक बार शेखचिल्ली की मां को बुखार आ गया। वह बेचारी वैसे भी अपने बेटे की बेवकूफी व निठल्लेपन से बहुत परेशान थी। वह चाहती थी कि शेखचिल्ली किसी ढंग के काम पर लग जाए, लेकिन उसकी ऊल-जुलूल हरकतों को देख कोई भी उसे काम पर रखने को राजी नहीं होता था। शेखचिल्ली की मां घास व लकड़ियां काटकर उन्हें बेचकर किसी तरह से दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर रही थी। उस दिन वह शेखचिल्ली से बोली, “बेटा! मुझे बहुत तेज बुखार है, आज मैं घास काटने नहीं जा पाऊंगी। तुम्हें वैसे भी घर का खर्च चलाने के लिए कुछ काम-काज तो करना ही चाहिए। यह दरांती लो और जंगल में जाकर घास काटकर लाओ। घास कैसे काटते हैं, यह तुम मुझे देखकर सीख ही गए होगे। कोई मुश्किल काम नहीं है। अगर तुम घास काटकर नहीं लाए तो हमें खाली पेट ही सोना पड़ेगा।”

भूखे रहने की बात शेखचिल्ली सपने में भी नहीं सोच सकता था। खाना ही तो उसको सबसे प्रिय था। सो उसने दरांती पकड़ी और मरे मन से चल दिया जंगल की ओर। वैसे शेखचिल्ली फख्र भी महसूस कर रहा था कि वह अपनी मां के काम आने जा रहा है, वह जरूर उसका अहसान मानेगी।





कुछ देर बाद घास का गट्टर सिर पर लादे वह घर लौट रहा था। घर पहुंचकर उसने गट्टर बहुत जोर से पटका, ताकि हर कोई उसकी आवाज सुनकर यह जान ले कि वह भी काम का आदमी है। शेखचिल्ली की मां ने जब देखा तो मारे खुशी के उसकी आंखें छलछला आईं।

तभी शेखचिल्ली को ध्यान आया कि दरांती तो वह जंगल में ही भूल आया है। वह तुरंत उल्टे पैर लौट पड़ा कि दरांती कहीं कोई और न उठा ले जाए। दरांती वहीं घास के पास पड़ी थी। दोपहर की तेज धूप में वह तपकर गर्म हो गई थी। शेखचिल्ली ने जैसे ही उसे छुआ कि चिल्ला पड़ा। दरांती बेहद गर्म थी, उसका हत्था भी गर्म हो चुका था। बिल्कुल वैसा ही गर्म, जैसा बुखार में उसकी मां का शरीर तप रहा था। शेखचिल्ली सोच में पड़ गया। आखिर दरांती इतनी गर्म कैसे हो गई, यह उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था।

कुछ देर सोचने के बाद वह एक ही नतीजे पर पहुंचा—हो न हो जरूरत दरांती को भी बुखार आ गया है। उसे लगा कि यदि इलाज नहीं करवाया तो बेचारी दरांती मर जाएगी। शेखचिल्ली ने अपना कुरता उतारकर तपती हुई दरांती सावधानी से उसमें लपेट ली और चल दिया गांव के हकीम के घर की ओर।

रास्ते में शेखचिल्ली को एक आदमी मिला। उसने शेखचिल्ली से पूछा, “बेटा तुम कहां जा रहे हो और दरांती को इस तरह से कपड़े में क्यों लपेट रखा है तुमने?”

शेखचिल्ली ने बताया, “भाई साहब! मेरी दरांती को तेज बुखार हो गया है, मैं इसे इलाज के लिए हकीम के पास ले जा रहा हूं।”

वह आदमी तुरंत समझ गया कि किसी महामूर्ख से पाला पड़ा है। उसे यूं भी दूसरों की टांग खींचने में मजा आता था, वह क्यों चूकता भला। बोला, “मैं शहर का हकीम हूं। तुम्हारे गांव के हकीम से कहीं ज्यादा हुनरमंद। मुझे दिखाओ, क्या हुआ है तुम्हारी दरांती को?”

कहकर उस आदमी ने दरांती को छुआ तो वह गर्म थी, “च्च...च्च...इसे तो बहुत तेज बुखार है। यह जानलेवा भी हो सकता है।” वह आदमी बोला।

सुनकर शेखचिल्ली चिन्ता में डूब गया। बोला, “तो मुझे क्या करना होगा?”

वह आदमी बोला, “बेटा, इस बुखार का तो बस एक ही इलाज है—इसे रस्सी से बांधकर कुएं के पानी में डुबकियां लगवाओ। कुछ ही देर में इसका बुखार उतर जाएगा।”

शेखचिल्ली ने उसका शुक्रिया अदा करके ठीक वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। पानी में दो-चार बार डुबाने से दरांती ठंडी हो गई। यह देख शेखचिल्ली ने चैन की सांस ली।





उसे लगा कि शहरी हकीम ने उसे बुखार उतारने का लुकमानी नुस्खा दे दिया है। वह तुरंत अपने घर की ओर दौड़ा, जहां उसकी मां बुखार में तप रही थी। जब वह घर पहुंचा तो उसकी मां को तेज बुखार था और वह अपनी सुध-बुध खो चुकी थी। उसे देख शेखचिल्ली बड़बड़ा उठा, “चिन्ता की कोई बात नहीं, मुझे बुखार का इलाज करना आता है।”

उसने अपनी मां को रस्सी से लपेटा और दौड़ चला कुएं की ओर। देखने वाले हैरान थे कि अब यह मूर्ख न जाने क्या करने जा रहा है। शेखचिल्ली ने आव देखा न ताव...रस्सी को कुएं में लटकाकर अपनी मां को पानी में डुबकियां लगवाने लगा। लोग जब तक वहां पहुंचते शेखचिल्ली अपना काम कर चुका था।

जब उन्होंने शेखचिल्ली से दरांती को बुखार आने व बुखार उतरने का किस्सा सुना तो उन्हें उस पर बहुत तरस आया। सभी यह सुनकर हंसना तो चाहते थे लेकिन हालात की नजाकत देख ऐसा कर न सके।